

55. LUOZHU JIANGCUO RINPOCHE 洛珠降措仁波且

## हेव खेलालु केन

यह स्याद्वार यी नाने वें र ता ते नान कुर ना वारी नुति । तार्र
नुस्मिक्निर्हे हे निन्मिस्यमा एक हमति।
पर्यान्त्य श्रीतर्या स्मित्र पर्या हु ह एक यो प्रिंट प्रवास
रु नी बेर मरु दिलाना रेने ह महुन सह सद्या देन में केही नाहर
यहित्रावेला व नद्रदेशस्य स्यायवर्षित या व क्रिन्य प्राय स्थित
वेन्नान्यनामान्यतिस्त्रीत्रान्त्रेत्रान्त्रेत्रान्त्रेत्रा
रे. स्था रहे स्वी ग्रीसार स्वा क्षेत्र सुंद्र बोर्ट्स देर बेले सुर क्रिका कर है।
ग्रीचित्स नाझेर कुनुस्तर्भनगर वर दूर पर्वेशन नधुनिस स्वयक्षेत्रम्भक्ष
क्रीया अस्या प्रमा अ विस् वेदर हे हे एक्स्मीया अस्ट नार्यस्था देश ही
कुर्धान्य अद्भूत् अध्यान्य विश्वास्त्र विश्वास्त्र प्रस्था होता स्त्र होता हो ।
गुर वर सम्मान्यस्य नर हुँ व वुन ते।
यह्न अवर प्यर हे खुन-गृह यीन निल्न वेर बते हो के नहेन के ने के ने
अर्था अस्य क्षेत्र अस्ति अस्ति निर्मात्त्री करादेत करावता
ल्किरयर बार् र सर्बेर पह क्या की हैन हमें लेती
处 拉 亲
वस्त है कैस वह तर से से लान के हो।
२०० द्वार के मान के किया है कि के नियं के किया है कि कि किया है कि किया है कि किया है कि
<b>娄</b> 页 云
खुर्खेद ख़ूद विद

日

年

月

页共 页

第

Ch082 45

2006

## 祝賀

頂禮仰諤雲高益西諾布!

有幸恭聞大教主仰諤雲高益西諾布的《正法寶典》,讓我們隨著震驚三 界的力量思遊在法界中,又一次見到真正的佛陀降世了!這不是一本書,而 是遍智力量的結晶,將會孕育出無數的佛菩薩,只要我們照著學習,它就會 帶領我們走上成佛之路!

恭祝多杰羌佛第三世雲高益西諾布大教主長駐人間, 遊利法界!

洛珠降措仁波且 2006年11月15日

## CONGRATULATIONS

I prostrate to H.H. Yangwo Wan Ko Yeshe Norbu!

I was fortunate to have respectfully read A Treasury of True Buddha-Dharma about the greatest leader of Buddhism, H.H. Yangwo Wan Ko Yeshe Norbu. The power of that book astonishes all Three Spheres. From the power of that book, we see that a true Buddha has again descended into this world! This is not a book. Rather, it is a crystallization of the power of omniscience. It will produce countless Buddhas and Bodhisattvas. As long as we learn and practice its contents, it will lead us onto the path to Buddhahood!

I respectfully wish that H.H. Dorje Chang Buddha III Wan Ko Yeshe Norbu, the greatest leader of Buddhism, live in the human realm forever and benefit all living beings in the dharmadhatu!

Luozhu Jiangcuo Rinpoche November 15, 2006